Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ महालक्ष्मी व्रत पूजा विधि ॥

॥ जय माँ महालक्ष्मी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ आरंभ और दैनिक पूजन ॥

१. तिथि और संकल्प

स्थानीय पंचांग से भाद्रपद शुक्ल अष्टमी की तिथि देखें। स्नान कर स्वच्छ स्थान पर माता लक्ष्मी का चित्र या प्रतिमा स्थापित करें। आश्विन कृष्ण अष्टमी तक नियमित पूजा का संकल्प लें। तिथि घटने-बढ़ने से कैलेंडर के दिन अलग हो सकते हैं।

२. सामान्य सामग्री

साफ चौकी, कपड़ा, माता का चित्र, जलपात्र, फूल, अक्षत, हल्दी या चंदन, धूप, दीप, फल और सात्त्विक नैवेद्य रखें। जहाँ परंपरा हो वहाँ दूर्वा, सोलह गाँठों वाला सूती धागा और मिट्टी का छोटा हाथी या गजलक्ष्मी का चित्र भी रख सकते हैं।

३. दैनिक पूजा

माता को जल प्रतीक रूप से अर्पित कर फूल, अक्षत, दीप और उपलब्ध प्रसाद चढ़ाएँ। “ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः” का स्मरण करें। चित्र पर सीधे जल न डालें; पात्र सामने रखकर अर्पण करें। अपनी रीति से कथा पढ़ें या सुनें।

सोलह गाँठों वाले सूत्र की विधि हर जगह एक जैसी नहीं है: कहीं आरंभ में तैयार सूत्र बाँधते हैं, कहीं दिनों के साथ गाँठें लगाते हैं। घर की रीति का पालन करें; धागा न हो तो नाम-स्मरण से भी सरल पूजा करें।

॥ अंतिम अष्टमी और समापन ॥

४. विशेष पूजा

आश्विन कृष्ण अष्टमी को पूजा स्थान साफ करके माता का चित्र और हाथी का प्रतीक सजाएँ। पुष्प, दूर्वा, दीप और घर में बना सात्त्विक नैवेद्य अर्पित करें। कुंती-गांधारी की कथा या अपनी परंपरा की कथा पढ़ें।

५. सूत्र, आरती और प्रार्थना

अपनी पारिवारिक विधि के अनुसार सोलह गाँठों वाला सूत्र माता को अर्पित करें या कलाई पर बाँधें। आरती कर परिवार और सभी जीवों के मंगल की प्रार्थना करें। धागे, हाथी और नैवेद्य की संख्या में क्षेत्रीय भिन्नता रहती है।

६. समापन और प्रसाद

कुछ परंपराओं में रात्रि को चंद्रमा या तारों को अर्घ्य देकर समापन किया जाता है। सुरक्षित स्थान से जल अर्पित करें; चंद्रदर्शन न हो तो स्थानीय रीति पूछें। कथा और आरती के बाद प्रसाद बाँटें और भोजन अपनी स्वास्थ्य-स्थिति के अनुसार करें।

लंबे उपवास को अनिवार्य न मानें। गर्भावस्था, बीमारी, मधुमेह या दवा लेने पर भोजन-पानी और चिकित्सकीय सलाह का पालन करें।

॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥